जामलो चलती गई

रुबीना खान

समीना मिश्रा द्वारा लिखित, तारिक अज़ीज़ के चित्रांकन द्वारा तैयार व *एकलव्य* द्वारा प्रकाशित किताब *जामलो चलती गई* से मेरा जुड़ाव काफी वक्त पहले से ही बन गया था। खासकर, इसका मुख्य-पृष्ठ मुझे छोटी-सी जामलो में उन तमाम हाशियाकृत आदिवासी समुदाय के बच्चों की झलक दिखा गया जिनके साथ काम के मार्फत मेरे रिश्ते बने हैं। कोविड महामारी में, लॉकडाउन के दौरान प्रवासी मज़दूरों की त्रासदी और सफर को बयान करती हुई सच्ची घटना पर आधारित इस कहानी की मुख्य पात्र 12 वर्ष की प्रवासी मज़दूर जामलो है जो बस्तर के मुड़िया आदिवासी समुदाय से है। इस जीवन्त किस्से को इसके अल्फाज़ तो बेशक मज़बूती और संवेदनशीलता से अपनी बात बयान करते ही हैं, वहीं इसका चित्रांकन भी उतनी ही संजीदगी के साथ इससे जुड़ाव महसूस कराता है। कहानी के चित्र कुछ इस तरह बनाए गए हैं जैसे जामलो का हौंसला और मुश्किलों से भरा सफर आँखों के सामने हकीकत के रास्ते से होते हुए गुज़र रहा हो। ऐसी ही कई वजहों से यह किताब मेरी पसन्दीदा किताबों की फेहरिस्त में आ गई।

शब्दों और चित्रों में अन्तर्सम्बन्ध

इस किताब को मैंने इसके चित्रों के माध्यम से जानने का प्रयास किया। किताब के मुख्य पृष्ठ से ही शब्दों और चित्रों के बीच के जुड़ाव को चित्रकार ने बखूबी उकेरा है। लॉकडाउन के दौरान उच्च वर्ग व निचले तबके के लोगों की ज़िन्दगी के फर्क को शब्दों के साथ ही चित्रों

में भी बेहतरी से दिखाया गया है। जहाँ महामारी के दौरान विशेष वर्ग के बच्चों के जीवन की सुविधाओं को दर्शाया गया है, वहीं दूसरी ओर जामलो जैसी प्रवासी मज़दूर बच्ची को पानी और खाने की तड़प के साथ धूप में तन्हा लम्बे रास्ते पर चलते देखा जा सकता है। साथ ही, उसके कन्धे पर मेहनत से कमाई मिर्चों का बोझ भी उसके साथ-साथ चल रहा है।

यह दिलचस्प बात है कि इन सबके बावजूद जामलो उस मैना की भूख को भी महसूस कर पा रही थी जो उसे रास्ते में मिली। इस वक्त जामलो के पास उसकी मिर्च का थैला ही खज़ाना मात्र था जिसे वह मैना के साथ बाँट रही थी और साथ ही, अपने तोते को भी याद कर रही थी।

आगे बढ़ते हैं तो कहानी की बेहद दुखद घड़ी सामने आ जाती है जब जामलो का तकलीफदेह सफर खत्म हो जाता है। दूर कहीं उसके माँ-बापू का उसके लिए इन्तज़ार और मुश्किल हालातों से जूझते लोगों की चलती हुई भीड़, यह सब कुछ उस हकीकत को बयाँ कर रहा था जिसमें लोगों ने बहुत कुछ खोया था। अगर उस कठिन वक्त में भी उनके पास कुछ था तो सिर्फ उनका हौंसला और उम्मीद। कहने को महज़ कलाकार

की कलाकारी है लेकिन मैं हर चित्र के साथ एक पाठक के रूप में खुद को उन हालातों में महसूस कर पा रही थी। इस किताब को कुछ इस तरह से तैयार किया गया है कि इसका हर एक चित्र बोलता प्रतीत होता है। जो पढ़ने की मुश्किल से जूझ रहा हो, ऐसा पाठक भी महज़ चित्रों के ज़रिए कहानी से उतनी ही गहराई से जुड़ पाएगा।

चित्रांकन में रंगों का प्रयोग

इस कहानी में चित्रकार ने आला दर्ज़े के रंगों का इस्तेमाल किया है जिसकी शुरुआत किताब के मुख्य-पृष्ठ से ही हो जाती है। नीले आसमान में सफेद बादल बेशक मौसम को साफ बता रहे हैं, पर दूसरी ओर ज़मीन पर गहरे नीले रंग में बेबस प्रवासी मज़दूरों की भीड़ को भी नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता। इन सबके बीच पेड़ों से गिरी कुछ पीली सूखी पत्तियाँ इस तरह दिख रही हैं मानो किसी तरह की वीरानगी इनके साथ चल रही हो। इस दौरान जामलो के झोले से गिरी कुछ सुर्ख लाल मिर्चें भी उसके सफर की रफ्तार को बयाँ कर रही हैं। वहीं करीब पड़ा अखबार लॉकडाउन जैसे भयावह दौर को प्रदर्शित कर रहा है। सुनसान रास्ते से गुज़रती छोटी जामलो के माथे को धूप की तपिश छू रही है। इस तपिश को उजले पीले रंग से दिखाया गया है। धूप ही धूप और हरे रंग की ठण्डक, छाया नाम मात्र को ही दिखाई दे रही है। दबे रंग से जामलो का चेहरा, कहीं-कहीं चेहरे से उड़ते रंग और फीकापन

आदिवासी बच्ची के हालात की गम्भीरता के साथ थकान एवं बेबसी को भी दर्शा रहे हैं। कहानी में आगे रुख करें तो सड़क का गहरा रंग, बोतल में पानी का कम्पन, जामलो के मटमैले कपड़े और अन्त में उसकी नीली-सफेद बद्दी वाली चप्पल और उस पर दरख्त से गिरी सूखी पीली पत्ती अपने आप में ही किसी चीज़ के खत्म होने का संकेत हैं। यह सब कुछ कहानी की वास्तविकता को दर्शा रहा है।

डिज़ाइन के दूसरे घटक जो कहानी में योगदान दे रहे हैं, वो हैं रेखा और आकार का प्रयोग, रोशनी का प्रयोग एवं टेक्सचर। कहानी में एक वक्त ऐसा भी आता है जब जामलो वक्त की मार से थक-हार कर ज़मीन पर सिमटकर लेट जाती है। इस दौरान उसके आसपास के जंगल का खामोश दृश्य उसके अकेलेपन को दर्शाता है।

दूसरी ओर, दिखाया जा रहा है कि एक उच्च वर्ग का छोटा बच्चा तमाम सुविधाओं को दरकिनार कर, बच्चा होने की आम ज़रूरत की नज़र से नीचे बस्ती में खेल रहे बच्चों को देख रहा है। उस वक्त उसके चेहरे की मायूसी को साफ देखा जा सकता है जहाँ तमाम सुविधाएँ होने के बावजूद केवल उसका अकेलापन ही उसके साथ था। इस दृश्य समेत कुछ

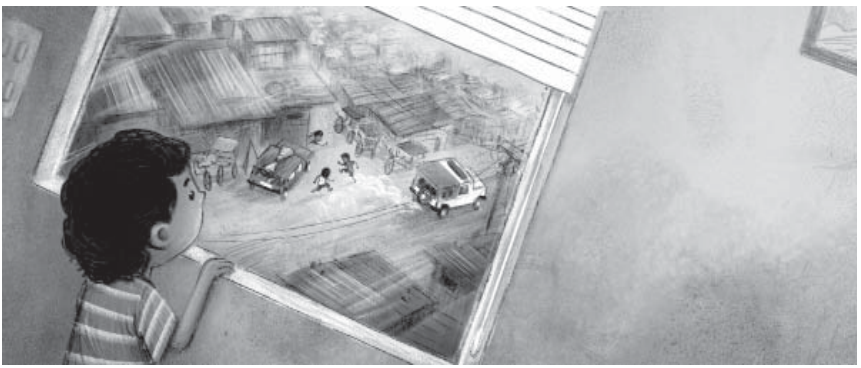

अन्य दृश्यों की गहराई को लम्बी सड़क से प्रस्तुत किया गया है। यहाँ पर आमने-सामने के दोनों पन्नों का इस्तेमाल बड़ी ही समझबूझ के साथ किया गया है। आम तौर पर किताबों में अगले पन्ने पर बढ़ने के साथ-साथ दृश्य भी बदलता जाता है पर इस किताब में दोनों पन्नों के चित्रों को आपस में बड़ी ही खूबसूरती के साथ जोड़ा गया है। किताब का आकार भी आड़ापन लिए हुए है जिससे एक ने इन्हें निखारने में मदद की है।

किताब के हर दृश्य में आधुनिकता को प्रतिकात्मक रूप से दिखाया गया है जो हमें वास्तविकता के नज़दीक ले जाता है। इसका एक बड़ा उदाहरण जामलो के किरदार में देखा जा सकता है। आदिवासी मज़दूर बच्ची को उसकी सरकारी स्कूल की यूनिफॉर्म में दिखाया गया है। अधिकांशत: देखा गया है कि ज़रूरतमन्द बच्चे अपने स्कूल की यूनिफॉर्म को स्कूल के बाद

लम्बे सफर की कहानी दिख पाए। एक दृश्य में तेज़ रफ्तार से जाती सरकारी गाड़ी का चित्रांकन है। उसकी रफ्तार इतनी तेज़ है कि वो छोटी-सी जामलो को सड़क पर खड़ा देख ही नहीं पाई।

कला माध्यम व शैली

किताब को बारीकी-से देखा जाए तो महसूस होता है कि मूड, वक्त और हालात अलग-अलग रंगों के ज़रिए उभरकर आए हैं। वॉटर कलर भी सारा दिन पहने रहते हैं। इसके पीछे वजह शायद यह हो सकती है कि इससे उनकी कपड़ों की ज़रूरत पूरी होती है और साथ ही, उन्हें एक साफ पोशाक पहनने को मिल जाती है। इसके अलावा, बद्दी वाली सफेद-नीले रंग की चप्पल जिसे अक्सर ही इस तरह के खास वर्ग के लोग इसके टूट जाने पर सेफ्टी पिन से जोड़कर दोबारा पहन लेते हैं। ठीक वैसी ही चप्पल जामलो के पैरों में थी और कुछ ऐसी ही मुश्किल का सामना जामलो

ने भी किया। चप्पल का टूटना भी उसकी हिम्मत के टूटने जैसा ही दिख रहा था। इस मुश्किल सफर में मील के पत्थर की भी खास भूमिका रही है जो जामलो के निरन्तर चलते जाने को दर्शा रहा है। विषम परिस्थिति को दर्शाती इस किताब को देखते वक्त मुझे डेनिस वॉन स्टोकर के एक आलेख की वे पंक्तियाँ याद आईं जहाँ वे कहती हैं, "एक किताब निजी अनुभव भी देती है।" यह कथन इस किताब से जुड़ाव को और पुख्ता करता है।

* * *

चित्र वे माध्यम हैं जिनके द्वारा किसी भी उम्र का व्यक्ति न केवल अपनी बात सरलता से कह पाता है बल्कि उसकी ज़िन्दगी से जुड़े अन्य पहलुओं को भी चित्रों में बखूबी देखा जा सकता है। जब किसी बात को कहना, लिखना या बताना मुश्किल होता है तब चित्र एक अच्छे विकल्प के रूप में काम करते हैं। असल में, चित्र उस आईने के समान होते हैं जो कुछ न बोलकर भी बहुत कुछ बोल देते हैं।

रुबीना खान: *मुस्कान* संस्था में एक दशक से ज़्यादा समय तक अलग-अलग भूमिकाओं में काम किया। इस दौरान संस्था द्वारा संचालित स्कूल में बतौर शिक्षिका कार्यरत रहीं। मुस्कान व यूनिसेफ के सहयोग से बाल संरक्षण के मुद्दों पर समुदाय व विभाग के साथ काम किया। वर्तमान में, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, भोपाल के बैरसिया ब्लॉक में कार्यरत। बाल साहित्य पढ़ने व लिखने में रुचि है।

सम्पर्क- rubina.khan@azimpremjifoundation.org

सभी चित्र: ***जामलो चलती गई*** किताब से साभार।

सन्दर्भ: बच्चों के विकास में साक्षरता और किताबों का महत्व - बौधिक, भावनात्मक एवं सामाजिक आयाम - डेनिस वॉन स्टोकर